

ক্রম

১। কর্মবাচ্য ও ভাববাচ্য ই, ত্ত, জ্ঞাপ, ব, হ, জ্ঞম, খন, প্রভৃতি স্বাতন্ত্র উত্তর ক্রম হয়।

- যথা,-
- ই + ক্রম = ইত
  - ত্তু + ক্রম = ত্তত
  - জ্ঞাপ + ক্রম = জ্ঞাপ
  - ব + ক্রম = বত
  - হ + ক্রম = হত
  - জ্ঞম + ক্রম = জ্ঞম
  - খন + ক্রম = খন

২। উল্লেখ্য ঞ - কারণে স্বাতন্ত্র উত্তর ক্রম হয়।  
[ স্যোষবর্ণের পূর্ববর্ণকে উল্লেখ্য বলে। ]

- যথা,-
- ঞশ + ক্রম = ঞশ
  - ক্ম + ক্রম = ক্ম
  - ব্ব + ক্রম = ব্ব
  - জ্জ + ক্রম = জ্জ
  - ক্ক + ক্রম = ক্ক
  - দ্ব্ব + ক্রম = দ্ব্ব
  - ক্ষ্ম + ক্রম = ক্ষ্ম

ल्यप्-प्रत्ययान्त कयेकटि विंशष्टि शब्द

अभि-अस्—अभ्यसा	परि-त्यज्—परित्यज्य	नि-रुध्—निरुध्य
सम्-अर्पि—समर्प्य	आ-दा—आदाय	आ-रुह्—आरुह्य
प्र-आप्—प्राप्य	प्र-दा—प्रदाय	आ-राधि—आराध्य
अधि-आपि—अध्याप्य	सम्-दिह्—सन्दिह्य	वि-रचि—विरचय्य
अधि-इ—अधीत्य	वि-दृ—विदीर्य	आ-वृ—आवृत्य
प्र-इ—प्रेत्य	वि-दारि—विदार्य	प्र-विश्—प्रविश्य
अनु-क्—अनुकृत्य	अपि-धा—पिधाय, अपिधाय	प्र-क्रा वा वच्—प्रोच्य
प्र-कुप्—प्रकुप्य	वि-धृ—विधूय	अधि-वस्—अध्युष्य
वि-क्—विकीर्य	वि-धृ—विधृत्य	प्र-वस्—प्रोष्य
सम्-क्लिप्—संक्लिप्य	सम्-प्र-धारि—सम्प्रधार्य	अनु-वद्—अनूद्य
वि-आ-ख्या—व्याख्याय	आ-नी—आनीय	नि-शम्—निशम्य
आ-गम्—आगम्य, आगत्य	वि-नी—विनीय	नि-श्वस्—निश्वस्य
उप-गम्—उपगम्य, उपगत्य	प्र-नम्—प्रणम्य, प्रणत्य	आ-श्रि—आश्रित्य
वि-गर्ह्—विगर्ह्य	वि-निन्द्—विनिन्द्य	प्रति-श्र्—प्रतिश्रुत्य
अव-गाह्—अवगाह्य, वगाह्य	वि-नाशि—विनाश्य	प्र-शन्स्—प्रशस्य
नि-ग्रह्—निग्रह्य	नि-पत्—निपत्य	अधि-शी—अधिशय्य
वि-ग्रह्—विग्रह्य	उ९-प्लु—उ९प्लुत्य	उ९-स्त्रा—उ९थाय
सम्-ग्रह्—संग्रह्य	वि-भज्—विभज्य	सम्-स्त्रापि—संग्रहाप्य
आ-घ्रा—आघ्राय	सम्-भृ—सभृत्य	वि-स्मि—विस्मित्य
वि-चारि—विचार्य	अनु-भृ—अनुभृत्य	सम्-स्वप्—संग्रह्य
सम्-चि—संक्षिप्त्य	उ९-मुच्—उ९न्मुच्य	प्र-सू—प्रसूय
आ-ह्रादि—आह्राद्या	नि-मील्—निमील्य	उप-स्—उपसृत्य
परा-जि—परराजित्य	सम्-यम्—संग्रह्य, संग्रह्य	वि-स्व्—विस्वृत्य
वि-ज्जा—विज्जाय	आ-रभ्—आरभ्य	वि-सृज्—विसृज्य
वि-तन्—वितत्य	वि-रम्—विरम्य	वि-स्त्रि—विस्त्रय्य

## ङ्काच्, ल्यप् (Gerunds)

२४। समानकर्तृकयोः पूर्वकाले (३।४।२१)—एकाधिक क्रियार एक कर्ता हईले पूर्वकालीन क्रियाबोधक धातुर उतुर ङ्का हय। क ईं, ङ्का थाके। ङ्का-प्रत्ययास्तु शब्द अव्यय। यथा, अहं कार्यं कृत्वा गृहं गमिष्यामि—  
After doing the work I shall go home. शिशवः चन्द्रं दृष्ट्वा हव्यन्ति—  
The children become happy to see the moon. स्नात्वा पीत्वा सुखी भव—Bathe, drink and be happy.

### ङ्काच्-प्रत्ययास्तु कयेकटि विशिष्ट शब्द

अद्—जङ्क्ता	क्री—क्रीत्वा	गम्—गत्वा
अर्पि—अर्पयित्वा	क्रीड्—क्रीडित्वा	गै—गीत्वा
इष्—इष्ट्वा, एषित्वा	क्लिष्—क्लिष्ट्वा, क्लिशित्वा	गर्ज्—गर्जित्वा
कुप्—कुपित्वा, कोपित्वा	क्लम्—क्लमित्वा, क्लान्तत्वा	ग्रह्—ग्रहित्वा, ग्रथित्वा
कृ—कृत्वा	क्लिप्—क्लिप्तत्वा	ग्रह्—ग्रहीत्वा
क्रम्—क्रमित्वा, क्रात्वा	खन्—खनित्वा, खात्वा	चि—चित्वा

ছিদ্—ছিত্ত্বা  
 জি—জিত্ত্বা  
 জ্ঞা—জ্ঞাত্ত্বা  
 তৃ—তৃত্ত্বা  
 তাজ্—তাজ্জ্বা  
 দা—দাত্ত্বা  
 দহ্—দহ্বা  
 দিব্—দেবিত্ত্বা, দ্যুত্বা  
 দৃশ্—দৃষ্ট্বা  
 দ্যুৎ—দ্যুতিত্ত্বা, দ্যোতিত্ত্বা  
 ধা—ধিত্ত্বা  
 ধৃ—ধৃত্ত্বা  
 ধৈ—ধ্যাত্ত্বা  
 নম্—নত্বা  
 নশ্—নষ্ট্বা, নংষ্ট্বা, নশ্চিত্ত্বা  
 নী—নীত্বা  
 নৃৎ—নর্তিত্ত্বা  
 পঠ্—পঠিত্ত্বা  
 পত্—পতিত্ত্বা  
 পা—পীত্বা  
 পৃ—পবিত্ত্বা, পৃত্ত্বা

প্রচ্ছ্—পৃষ্ট্বা  
 ভিক্ষ্—ভিক্ষিত্ত্বা  
 ভিদ্—ভিত্ত্বা  
 ভন্জ্—ভক্ত্বা, ভঙ্ক্ত্বা  
 ভুজ্—ভুক্ত্বা  
 ভূ—ভূত্বা  
 ভ্রম্—ভ্রমিত্ত্বা, ভ্রাত্ত্বা  
 মন্—মত্বা  
 মস্থ্—মস্থিত্ত্বা, মথিত্ত্বা  
 মিল্—মিলিত্ত্বা  
 মুচ্—মুক্ত্বা  
 মুষ্—মুষিত্ত্বা  
 যাচ্—যাচিত্ত্বা  
 যজ্—ইষ্ট্বা  
 রুচ্—রুচিত্ত্বা, রোচিত্ত্বা  
 রুদ্—রুদিত্ত্বা  
 লভ্—লব্বা  
 লিখ্—লিখিত্ত্বা, লেখিত্ত্বা  
 বদ্—উদিত্ত্বা  
 বপ্—উপ্ত্বা  
 বস্—উষিত্ত্বা

ব্যথ্—ব্যাত্ত্বা  
 ব্যধ্—ব্যক্ত্বা  
 বিদ্—বিদিত্ত্বা  
 বুধ্—বুদ্ধা  
 ক্রা বা বচ্—উক্ত্বা  
 শম্—শমিত্ত্বা, শাস্ত্বা  
 শী—শয়িত্ত্বা  
 শ্ৰ্—শ্ৰুত্বা  
 সিচ্—সিক্ত্বা  
 সিব্—সেবিত্ত্বা, স্যুত্বা  
 সৃজ্—সৃষ্ট্বা  
 সেব্—সেবিত্ত্বা  
 স্থা—স্থিত্ত্বা  
 স্থাপি—স্থাপয়িত্ত্বা  
 স্না—স্নাত্ত্বা  
 স্পৃশ্—স্পৃষ্ট্বা  
 স্মৃ—স্মৃত্ত্বা  
 স্বপ্—সুপ্ত্বা  
 হন্—হত্বা  
 হা—হিত্ত্বা  
 হ্—হত্বা

২৫। অলংখম্বোঃ প্রতিষেধয়োঃ প্রাচাং ক্ত্বা  
 (৩।৪।১৮)—নিষেধার্থক 'অলম্' ও 'খলু' শব্দের যোগে ধাতুর উত্তর ক্ত্বা  
 হয়। এইরূপ ক্ত্বা-প্রত্যয়ের অন্য কোন সমাপিকা ক্রিয়ার দরকার হয় না। যথা,  
 অলং রুদিত্ত্বা—Do not weep. খলু পীত্বা—Do not drink. অলং গত্বা—  
 Do not go.

## ল্যপ্

১। "প্রত্যয়ে নক্ষ্মপূর্বে ক্রো ল্যপ্" — নক্ষ্ম-ক্রি ল্যপ্-প্রত্যয়ে  
প্রত্যয়ে প্রত্যয় হলে ক্রো ক্রোনে ল্যপ্ হয়।

২। "অপ্রস্রা লিতি কৃতি লুক্" — ল্যপ্-প্রত্যয়ে হলে, অপ্র-  
প্রস্রান্ত ঙ্রাভূর উত্তর ৫ আগম হয়।

যথা, - অন্-ক্ + ল্যপ্ = অ্নকৃত্য।

৩। "বা ল্যপি" — ল্যপ্-প্রত্যয়ে হলে, ন-কারান্ত অনির্ট (হন্, হান্, তন্ প্রভৃতি) ঙ্রাভূর ন-কারের নিত্য এবং ঙ্রা-কারান্ত অনির্ট ঙ্রাভূর ঙ্রা-কারের বিকল্পে লোপ হয়।

৪। "ল্যপি লঘুপূর্বাৎ" — ল্যপ্-প্রত্যয়ে হলে অপ্রস্রান্তের পরস্থিত  
-নিচ্ ক্রোনে অন্ হয় এবং দীর্ঘ স্রবের পরস্থিত নিচ্-র  
লোপ হয়।

যথা, - বি-রন্ + নিচ্ + ল্যপ্ = বিরন্স্রায়া।

অথ, - স্বাজ্ + নিচ্ + ল্যপ্ = স্বাজ্জ্য।

# ग्य

"आहूलाग्य" - कर्मावाच्ये ऽ अकारान्त  
ते व्यञ्जनानि वाचुर् अन्तर्ग्य इय । ग् इ इय याय, 'य'  
शङ्क ।

यथा, - क् + ग्य = कार्य	मिच् + ग्य = मेष्य
क्व् + ग्य = वार्य	क्ष् + ग्य = क्षय्य
श् + ग्य = शर्य	वृश् + ग्य = वृष्य
श्च + ग्य = श्चर्य	विच् + ग्य = विस्य
वच् + ग्य = वाच्य	ज्ञन् + ग्य = ज्ञान्य
यज् + ग्य = यज्य	यज् + ग्य = यज्य
यज् + ग्य = योज्य	श्चन् + ग्य = श्चान्य

क्व् + ग्य = क्वय्य, क्वय्य

वच् + ग्य = वाच्य, वाच्य

प्र-यज् + ग्य = प्रयोज्यः, प्रयोज्यः

नि-यज् + ग्य = नियोज्यः, नियोज्यः

आ-चर् - ग्य = आचर्यः,